Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 5, Issue 2 – 2020
ISSN: 2581-3501

आधुनिक समाज में मानव-मूल्यों की प्रासंगिकता

प्रमोद कुमार[1]

[1]सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सरिया कॉलेज, सरिया, गिरिडीह, पिन कोड-825320.

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह बुद्धिजीवी है, उसमें अच्छे-बुरे को समझने- करने की शक्ति होती है और इसी कारण वह नैतिक कहलाता है। समाज व्यक्तियों का ऐसा समूह है, जहाँ मेलजोल और अच्छा आचरण आवश्यक होता है। इस गुण के आधार पर मनुष्य के लिए अपनी सभी परिस्थितियों के साथ साहचर्य एवं समायोजन करना सम्भव होता है। ऐसे आचरण के कारण ही मनुष्य को सामाजिक मान्यता एवं पद मिलते है। समाज ही उसे जन्म देता है और विकसित करता है समाज में रहकर ही मनुष्य मनुष्यत्व का गौरव तथा व्यक्तित्व की विशिष्टता प्राप्त करता है। व्यक्ति समाज की व्यवस्था के वृत में रहकर ही अपनी जीवन यात्रा प्रारंभ करता है तथा अपने आत्म-विस्तार, आत्मा-संरक्षा और आत्मोपलब्धि के लिए प्रयासरत रहता है। मानव समाज को अपने जीवन काल में सफलता हेतु एक लक्ष्य निर्धारित करना होता है जो लक्ष्य कुछ नियमों, संयम, दया, करुणा आदि नैतिक मूल्यों को पालन करने से ही प्राप्त होते हैं। अरस्तू ने मानव को सामाजिक प्राणी मानते हुए कहा है कि "जो मनुष्य समाज में नहीं रहता वह वास्तव में मनुष्य न होकर या तो पशु है या देवता।"(1) मूल्यों के इसी सामाजिक महत्व को अज्ञेय जी ने इन शब्दों में व्यक्त किया है - "जिस समाज में कोई ऐसे मूल्य नहीं हैं जिनके लिए जिया जाता है और जिनके लिए मरा भी जा सकता है, वह समाज अपने मन के साथ बलात्कार की स्थिति स्वीकार कर चुका है, अपना मन ही बलात्कारी को सौंप चुका है। समाज को पुलिस या सरकार या संसद नहीं बचाती, समाज को अपनी शक्ति बचाती है जो उन मूल्यों से मिलती है जिनके लिए वह जीता है।"(2)

जीवन एवं मूल्यों के पारस्परिक संबंध के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि व्यक्ति के समस्त चिंतन का विकास-विस्तार, समाज के संदर्भ में ही है। मनुष्य के प्रत्येक कार्य का औचित्य-अनौचित्य, भलाई-बुराई, योग्यता-अयोग्यता, सत्यता-असत्यता आदि का निकष मूल्य रूपी सामाजिक धारणाएँ हैं। किंतु इस तथ्य में जीवन-मूल्यों की प्रासंगिकता का प्रश्न निहित है। व्यक्ति के समस्त चिंतन का विकास-विस्तार, समाज के संदर्भ में ही है। किंतु जब हम

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

जीवन-मूल्यों की प्रासंगिकता की बात करते हैं तो प्रश्न उठता है कि जीवन-मूल्यों का महत्व-प्रासंगिकता व्यक्ति के संदर्भ में है या कि समाज के संदर्भ में। इसलिए जीवन-मूल्यों की प्रासंगिकता के संदर्भ में कह सकते हैं कि जीवन-मूल्य मानव के उत्कर्ष का मूलाधार है। मानव के बिना उनका और इनके बिना मानव का अस्तित्व निरर्थक है। मानव के बिना किसी भी वस्तु के मूल्य और महत्व का प्रश्न ही नहीं उठता। दूसरी ओर, मूल्य का प्रत्यय मानव के बिना नहीं समझा जा सकता है क्योंकि मानवीय संवेदनाओं की अनुपस्थिति अथवा उनपर ध्यान केंद्रित किए बिना मूल्यों को परिकल्पना संभव नहीं है। मानव जीवन के मूल्य आदर्श-मानदंड हैं। ये आदर्श-मानदंड किसी भी व्यक्ति-समाज के श्रेय और प्रेय की कसौटी हैं। मनुष्य सर्वप्रथम व्यक्ति है, इकाई है। इसके बाद ही वह समाजिक जीवन के अंतर्गत आता है।हमारे समाज में मूल्यों की एक बड़ी संख्या है जो संकल्प, अवधारणाएं, आदर्श और उच्च उपेक्षाओं से निर्मित होते हैं। अहिंसा, सत्य, धर्म, दान, आचार, करुणा, चित्त शुद्धि, धैर्य, औचित्य, औदार्य, कृतज्ञता, अक्रोध दूरदर्शिता, दृढ़ संकल्प, श्रम, शौर्य, पराक्रम, क्षमा, विवेक, परोपकार, उद्यम, संतोष, शील, अस्तेय, मातृ-पितृ भक्ति, गुरु भक्ति, अतिथि सत्कार, प्रायश्चित, सत्संगति जैसे अनेक मूल्य हैं। ये सारे मूल्य क्षेत्र विशेष या देश विशेष तक सीमित होते हैं जिन पर अपनी संस्कृति का विशेष प्रभाव रहता है। इन सभी मूल्यों के निर्माण में परिस्थिति-विशेष तथा परिवेश विशेष की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

सामाजिक जीवन में मूल्यों का बहुत ही महत्व है। मूल्यों के अभाव में कोई भी समाज अपना अस्तित्व नहीं बनाए रख सकता। डॉ. राधाकमल मुकर्जी ने समाज एवं व्यक्ति के जीवन में मूल्यों के अत्यधिक महत्व की प्रतिष्ठा करते हुए लिखा है कि " समाज, मूल्यों का एक संगठन व संकलन है।"(3) मूल्यों से ही समाज महत्ता प्राप्त करता है। सामाजिक मूल्यों, परंपराओं और रीति-रिवाज आदि से समाज की संस्कृति का निर्माण होता है। भारतीय समाज की अपनी गौरवमयी संस्कृति है जिसके अपने मूल्य या आदर्श है। समय-समय पर संस्कृति का मूल्यों के आवागमन द्वारा परिमार्जन होता रहता है। इन मूल्यों का जन्म समाज की आकांक्षाओं पर ही निर्भर करता है। आधुनिक भारतीय समाज में निम्नांकित जीवन मूल्य प्रभावी है :- अहिंसा, अध्यात्मिकता, धर्म, त्याग, विश्व बंधुत्व, परोपकार, सामाजिक न्याय, सत्य, पुरुषार्थ आदि।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 5, Issue 2 – 2020
ISSN: 2581-3501

आज आधुनिक समाज का एक बड़ा भाग नैतिक अराजकता में जी रहा है। आज हम उलझे-उलझे समाज में रह रहे हैं। आज मूल्यों का ह्रास नीति एवं सार्वजनिक जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। आज की पीढ़ी भी इससे अछूती नहीं रही है। वैश्विक जीवन शैलियां, स्त्रियों तथा बच्चों के प्रति बढ़ती हिंसात्मक घटनाएं आज के युग की वास्तविकताएं हैं। आज का विद्यार्थी भी स्वार्थ हित संहारक एवं विघटनकारी प्रवृत्तियों में डूबता जा रहा है। वर्तमान समाज में स्वार्थपरता एवं अनैतिकता का प्रभाव पड़ने से मानव प्रेम, आस्था एवं विश्वास के अभाव में तिरोहित होता जा रहा है। आज समाज में जिस प्रकार से मानवीय मूल्यों व नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। उससे अनेक प्रश्न उभरकर सामने आ रहे हैं। आज पल-पल हमारे संस्कार और सांस्कृतिक मूल्य जिस प्रकार से गिर रहे हैं उसे लौटा लाना कठिन काम है मानव आज इतने स्वार्थी हो गए हैं कि उसका एकमात्र लक्ष्य अपना कार्य सिद्ध करना है। कार्य संपन्न होने के उपरांत आभार प्रकट करना भूलने लगे हैं। कृतज्ञ होना कोसों दूर की बात हो जाती है। सहनशीलता तथा क्षमा के अभाव ने व्यक्ति को इतना संकुचित बना दिया है कि औदार्य जैसे शब्द कहीं दिखते ही नहीं। सब कुछ पा लेने की लालसा व महत्वाकांक्षा ने समाज से दूरदर्शिता जैसे अमूल्य गुणों को लुप्त कर दिया है।

21वीं सदी में जिस प्रकार से तकनीकी व वैज्ञानिक क्षेत्र में उन्नति हो रहे हैं, उससे कहीं न कहीं हमारे मानव मूल्यों का अत्यधिक ह्रास हुआ है। इसके कारण ही व्यक्तिगत, सामाजिक अपराध, आतंक और हिंसा बढ़ी है। यहां तक कि प्राकृतिक पर्यावरण की भी अपूरनीय क्षति हुई है। आज जिस प्रकार से समाज में फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर आदि प्रयोग हो रहे हैं, उससे मानवता तार-तार हो रहा है। इस संदर्भ में मानव-मूल्य का विशेष महत्व है क्योंकि यही है जो फेसबुक, ट्विटर आदि के परे मानवता को बचा सकता है।

वर्तमान समाज में ऐसे ही अनेक विसंगतियां कायम है। इन विसंगतियों के कारण ही मूल्यों के प्रति सम्मान कम होता जा रहा है। भारतीय संस्कृति पर पूंजीवादी संस्कृति का प्रभाव जिस गति से पड़ रहा है। वह मूल्यों के ह्रास का मुख्य कारण है। प्रसिद्ध डच चित्रकार वान गाघ ने अपने भाई के नाम लिखे गए एक पत्र में दक्षिणी फ्रांस के एक कस्बे का जिक्र करते हुए जो लिखा था वह आज सच साबित हो रहा है उसने लिखा था - "मैं इन लोगों को पिछले तीन महीनों से देख रहा हूँ, मैं तुम्हें बतलाता हूँ-ये सभी लोग विक्षिप्त हैं। उनकी आँखों को देखो। इस सारी आबादी में एक भी साधारण, स्वस्थ, तर्कसंगत व्यक्ति नहीं। मेरी अपनी राय

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 5, Issue 2 – 2020
ISSN: 2581-3501

तो यह है कि यह सारा नगर मिरगी के रोग से पीड़ित है। अपनी चेतना को कोड़े मार-मारकर ये भावावेश की चरम सीमा तक पहुँचा देते हैं कि मालूम होता है कि अब फिट आया और इनके मुँह से झाग निकलने लगा। लेकिन क्या वह फिट आता है? ताज्जुब तो इसी बात का है। लगता है कि अब चरम सीमा आयी, अब चरम सीमा आयी, पर वह चरम सीमा आती नहीं। मैं तीन महीने से प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि अब कोई क्रान्ति हुई, अब कोई क्रान्ति हुई, अब कोई ज्वालामुखी फूटा। कितनी बार मैंने सोचा कि क्या शहर में रहने वाले यकायक पागल हो जाएंगे और एक-दूसरे की गर्दन उतारने के लिए व्याकुल हो उठेगें। वह प्रथम प्रलय की घड़ी आ रही है। आएगी और बहुत जल्दी। उस समय एक भयानक दृश्य उपस्थित होगा। हत्याएँ होंगी। आगजनी, बलात्कार, सर्वनाश क्या नहीं होगा?"(4) वर्तमान परिवर्तनशील सामाजिक परिवेश में जीवन मूल्यों में विचलन तथा अस्थिरता के परिणामस्वरूप मनुष्य आचरण हेतु दृढ़ मानदण्डीय आधार खो बैठा है तथा उसकी नियति उस पंगत की भाँति हो गयी है जिसकी डोर कट चुकी है। आस्था और विश्वास का स्थान तर्क ने ले लिया है, किन्तु जीवन मात्रा तर्क के आधार पर नहीं जिया जा सकता है। इसे तो किसी न किसी स्थिर आधार के प्रति विश्वस्त होना ही पड़ेगा।

मूल्यों की परिव्यापति मानव-जीवन से लेकर समाज तक है। आज मूल्य संक्रमण के संदर्भ में समाज, परिवार और व्यक्ति की भूमिकाओं से नकारा नहीं जा सकता। परिवार, समाज की एक इकाई होता है। सामाजिक मूल्यों के विकास एवं स्थायित्व में कभी-कभी परिवार और परिवार के सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। किंतु मूल्य-परिवर्तन के संदर्भ में यदा-कदा परिवार एवं परिवार के सदस्यों का परंपरागत सामाजिक बंधनों के प्रति परंपरारहित व्यवहार और स्थितियों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। सामाजिक इकाई के रूप में व्यक्ति व्यष्टि है। किंतु उसकी व्यष्टि-निष्ठता के कारण समष्टिपरक चिंतन में विघटन की स्थिति बन जाती है। परिणामस्वरूप मूल्यों का संक्रमण शुरू होने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। समष्टि (समाज) के स्थान पर व्यष्टि (व्यक्ति) की महत्व-प्रतिष्ठा के परिणामस्वरूप परंपरागत सामाजिक बंधनों में स्वाभाविक रूप से शिथिलता आती है। डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ के अनुसार "व्यक्तिपरक मूल्य-मान्यताओं में ह्रास या वृद्धि का कारण उसको आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक स्थितियों की भूमिका भी योगदान देती हैं, लेकिन शिक्षा, संसार और जीवन पद्धति की

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

विसंगतियाँ भी उसे प्रायः अनुदार बनाती हैं और ऐसी स्थिति में व्यक्तिपरक स्तर पर मूल्य संक्रमणता विकसित होती है।"(5)

वैसे भारतीय समाज जीवन-मूल्यों के प्रति हमेशा जागरूक रहा है। यह समाज हर परिस्थिति में स्वयं को संभालते हुए इन्हीं मूल्यों के कारण एक अलग पहचान बनाई है। भारतीय संस्कृति में मानव, राष्ट्र एवं सभ्यता के सभी आयामों के समग्र विकास की अवधारणा एवं क्षमता समाहित है। किसी अन्य संस्कृति में ऐसी विशालता एवं उदारता का परिचय नहीं मिलता। सभी मनुष्यों एवं राष्ट्रों की प्रकृति भिन्न-भिन्न होती है। सभी को एक ही विधान से, एक नियम से संचालित एवं परिचालित नहीं किया जा सकता और यही कारण है कि भारतीय संस्कृति अपने अपरिमित वैविध्य के बाद भी एकता बनाए रखने में सम्भव हो सकी है। भारत ने आजादी की लड़ाई, अहिंसा, असहयोग, सत्याग्रह और सत्य को साधन बनाकर जीती है। आज भी वह अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अनेक दबावों के होते हुए भी, शान्ति स्थापना का प्रयास कर रहा है। आज भी भारत सहअस्तित्व के सिद्धान्त पर अटल है तथा आर्थिक क्षेत्र में सभी देशों के सहयोग का आकांक्षी है। हमारे इस दृष्टिकोण का मुख्य कारण यही है कि भौतिक समृद्धि के लिए प्रयत्नशील होते हुए भी भारतवासी आध्यात्मिकता की भावना से अनुप्राणित रहते है। भारतीय समाज ने हमेशा मानव मूल्यों को मोतियों के समान पिरोने का प्रयास किया है। मानव मूल्यों के गुणों के प्रति उर्मिला रस्तोगी ने कहा है - "वास्तव में यह तो एक माला है जिसका एक मोती यदि अलग होता है तो दूसरे मोती भी अलग होने लगते हैं। अतः इन मोतियों का एकजुट रहना ही मानव-मूल्यों को सुरक्षा प्रदान कर सकता है।"(6)

जैसा कि हम जानते हैं कि जीवन मूल्य दो प्रकार के होते हैं:- शाश्वत मूल्य और समकालीन मूल्य। भारतीय दर्शन की दृष्टि से शाश्वत मूल्यों का स्थान सर्वोच्च रहा है। किसी भी साहित्य का अवलोकन करें तो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक सम्पूर्ण साहित्य शाश्वत मूल्यों से अनुप्राणित है। मानव समाज को उत्तरोत्तर गति प्रदान करने में इन मूल्यों की अहम् भूमिका रही है। इन मूल्यों के अनुसरण के कारण ही उत्कृष्ट चिंतन और आदर्श कर्तव्य की दिशा में मनुष्य को अग्रगामी एवं प्रगतिशील बनने में काफी सहायता मिली है। हमको अपने अतीत की विरासत से मिले हैं। ये किसी विशेष वर्ग सम्प्रदाय के न होकर समस्त मानवता को विकसित करते हैं।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

Vol. 5, Issue 2 – 2020
ISSN: 2581-3501

यह सर्वमान्य है कि जीवन की श्रेष्ठता का अर्थ मनुष्य ही खोजता है। उसमें विवेक है, इसलिए उसके भीतर अलग-अलग धारणाएं और विचार बनते हैं। उसका जीवन प्रकृति के साथ मुठभेड़ करते हुए नहीं बीतना चाहिए अपितु प्रकृति के सहचर के रूप में दिखाई देना चाहिए। विवेक उसे सभ्यताएँ विकसित करने का विचार देता है। वह प्रकति के रहस्यों को सुलझाने की कोशिश करता है और उसे आविष्कार कहता है। इसलिए मनुष्य केवल संसार में प्रसन्न होने नहीं आया है। वह सम्पूर्ण मानवता के लिए श्रेष्ठता का सृजन करने आया है। वह उदारता और ईमानदारी प्राप्त करने आया है। प्रत्येक मनुष्य अपने कर्म से स्वयं का रूप बदल सकता है। जीवन को आकार दे सकता है। खुलकर बहने वाले पानी के प्रवाह में जैसे रंग तत्काल घुल-मिल जाते हैं और प्रवाह को अपने रंगों से रंगने लगते हैं जीवन की स्थिति भी ऐसी होती है। आज मानव-मूल्यों को जीवन-यात्रा में पल-प्रतिपल परिवर्तित होने की आवश्यकता है। समय-पट पर जागृति का एक नया लेख रचने की नितान्त आवश्यकता है। प्रसिद्ध रूसी लेखक ग्रेबियल गर्सिया माखेज कहते है कि "मनुष्य सिर्फ उस रोज पैदा नहीं होता, जब माँ उसे जन्म देती है। जीवन उसे बार-बार अवसर देता है कि वह जन्म ले।"(7) जीवन-मूल्य मनुष्य के परम मित्र हैं। जिस प्रकार पुष्प के बिना उपवन व्यर्थ है, चन्द्रिका के बिना चन्द्र व्यर्थ है, जल के बिना सरोवर व्यर्थ है, प्रकाश के बिना दीपक व्यर्थ है, मधुर झंकार के बिन वीणा व्यर्थ है, सुगन्ध के बिना सुमन व्यर्थ, उसी प्रकार जीवन-मूल्यों के बिना जीवन व्यर्थ है। यह हमारे जीवन को सुन्दर बनाते हैं और कीर्ति, आनन्द और सुख-शान्ति लाते हैं। यह सत्य है कि नैतिकता का मापदण्ड समाज, काल और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। कथाकार महीप सिंह का कथन भी इस विषय में उचित जान पड़ता है कि "हमारे समय का मनुष्य एक जागरूक, संवेदनशील और बेहतर इंसान है। भूमण्डलीकरण के कारण इंसान का दायरा सीमित नहीं रह गया है। उसका संबंध देश और समय की सीमाओं को लाँघकर बहुआयामी हो गया है। हर देश के बहुधर्मी होने के कारण मनुष्य का मानसिक स्तर व्यापक रूप से विस्तृत हुआ है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज मनुष्य भौतिक समृद्धि की ओर तेजी से बढ़ रहा है, इसलिए कभी-कभी वह जीवन के उच्चतर मूल्यों की परवाह नहीं करता है।"(8)

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मनुष्य एवं मनुष्यसमाज के परिप्रेक्ष्य में मूल्यों की प्रासंगिकता स्वयंसिद्ध है, मानव-जीवन में मूल्यों का अक्षुण्ण महत्व है। मूल्यों का यह महत्व

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के स्तर पर भिन्न-भिन्न रूपों में देखा जा सकता है। आधुनिक मानव प्रगति के एक नए मोड़ पर खड़ा है। ऐसा समय पहले कभी नहीं था। सूचना, ज्ञान और शक्ति का एक नया ताल-मेल, एक नया संतुलन, एक नया समीकरण पूरे संसार में बन रहा है। ऐसे समय में हमें जीवन-मूल्यों के गौरवमय मंथन की नितान्त आवश्यकता है। इस हेतु वर्तमान स्थितियों एवं समस्याओं से उभरने का एकमात्र उपाय है-जीवन मूल्य। हमें एक ऐसा जीवन चाहिए, जो नैतिक मूल्यों से अनुप्रेरित हो और आस्था एवं संकल्प को विकसित करें, जिससे मानव में आस्था के उत्थान, बन्धुत्व एवं सद्भावना का विकास होता हो। वस्तुतः जीवन-मूल्यों का ह्रास को रोककर उनकी पूर्ण स्थापना करना ही हम सभी का उददेश्य होना चाहिए। क्योंकि मानव का जीवन बिना मूल्यों के पशु-तुल्य है। यह सत्य है कि जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक निरन्तर अपनी उपस्थिति के साथ संस्कृति, सभ्यता और मानवता का अभिन्न अंग रही है।अतः जीवन-मूल्य आज के युग की आवश्यकता है। इन्हीं गुणों के द्वारा हम एक मानव को दूसरे मानव के निकट लाने का प्रयास करते हैं और 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना का संदेश दे सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सेठी, डॉ. हरीश कुमार(2008), जीवन-मूल्य विमर्श, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-110.
2. वही, पृष्ठ-111.
3. वही, पृष्ठ-172.
4. भारती, डॉ. धर्मवीर (2019), मानव-मूल्य और साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृष्ठ-30.
5. सेठी, डॉ. हरीश कुमार(2008), जीवन-मूल्य विमर्श, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-140.
6. शास्त्री, सत्यव्रत (2015), मानव-मूल्य परिभाषाएं और व्याख्याएं, भारतीय विद्या मंदिर, कोलकाता, पृष्ठ-13-14.
7. पंखुड़ी, शोध पत्रिका विशेषांक (2015), पृष्ठ-10.
8. वही, पृष्ठ-11.

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.